श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

नवजात शिशुओं के लिए सुरक्षा कवच

भा°म° 10.6.22- 10.6.29

अव्यादजोऽङ्घ्रि मणिमां(म्)स्तव जान्वथोरू,

यज्ञोऽच्युत:(ख्) कटितटं(ञ्) जठरं(म्) हयास्य: ।

हृत् केशवस्त्वदुर ईश इनस्तु कण्ठं(वँ्),

विष्णुर्भुजं(म्) मुखमुरुक्रम ईश्वर:(ख्) कम् ॥ 22 ॥

अजन्मा भगवान तुम्हारे पैरों की रक्षा करें, मणिमान तुम्हारे घुटनों की, यज्ञ पुरुष तुम्हारी जाँघों की, अच्युत तुम्हारी कमर के ऊपरी भाग की तथा हयग्रीव तुम्हारे उदर की रक्षा करें। केशव तुम्हारे हृदय की, ईश तुम्हारे वक्षस्थल की, सूर्यदेव तुम्हारे गले की, विष्णु तुम्हारे भुजाओं की, उरुक्रम तुम्हारे मुँह की तथा ईश्वर तुम्हारे सिर की रक्षा करें।

चक्रयग्रत:(स्) सहगदो हरिरस्तु पश्चात्,

त्वत्पार्श्वयोर्धनुरसी मधुहाजनश्च ।

कोणेषु शङ्ख उरुगाय उपर्युपेन्द्रस्-

तार्क्ष्य: क्षितौ हलधर:(फ्) पुरुष:(स्) समन्तात् ॥ 23॥

चक्रधर भगवान आगे से, गदाधारी हरि पीछे से तथा धनुर्धर मधुसूदन एवं खडग् धारी भगवान् अजन दोनों ओर से तुम्हारी रक्षा करें। शंखधारी उरुगाय समस्त कोणों से तुम्हारी रक्षा करें। उपेन्द्र ऊपर से, गरुड़ धरती पर तथा परम पुरुष हलधर चारों ओर से तुम्हारी रक्षा करें।

इन्द्रियाणि हृषीकेश:(फ्) , प्राणान् नारायणोऽवतु ।

श्वेतद्वीपपतिश्चित्तं(म्), मनो योगेश्वरोऽवतु ॥ 24॥

हृषीकेश तुम्हारी इन्द्रियों की तथा नारायण तुम्हारे प्राणवायु की रक्षा करें। श्वेतद्वीप के स्वामी तुम्हारे चित्त की तथा योगेश्वर तुम्हारे मन की रक्षा करें।

पृश्निगर्भस्तु ते बुद्धि- मात्मानं(म्) भगवान् पर: ।

क्रीडन्तं(म्) पातु गोविन्द:(श्), शयानं(म्) पातु माधव: ॥25 ॥

व्रजन्तमव्याद् वैकुण्ठ, आसीनं(न्) त्वां(म्) श्रिय:(फ्) पति: ।

भुञ्जानं(यँ) यज्ञभुक् पातु , सर्वग्रहभयङ्कर: ॥ 26॥

भगवान् पृश्निगर्भ तुम्हारी बुद्धि की तथा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् तुम्हारे आत्मा की रक्षा करें। तुम्हारे खेलते समय गोविन्द तथा तुम्हारे सोते समय माधव तुम्हारी रक्षा करें। भगवान् वैकुण्ठ तुम्हारे चलते समय तथा लक्ष्मीपति नारायण तुम्हारे बैठते समय तुम्हारी रक्षा करें। इसी तरह भगवान् यज्ञभुक, जिनसे सारे दुष्टग्रह भयभीत रहते हैं तुम्हारे भोजन के समय सदैव तुम्हारी रक्षा करें।

डाकिन्यो यातुधान्यश्च, कुष्माण्डा येऽर्भकग्रहा: ।

भूतप्रेतपिशाचाश्च, यक्षरक्षोविनायका: ॥27 ॥

कोटरा रेवती ज्येष्ठा, पूतना मातृकादय: ।

उन्मादा ये ह्यपस्मारा, देहप्राणेन्द्रियद्रुह: ॥28॥

स्वप्नदृष्टा महोत्पाता, वृद्धबालग्रहाश्च ये ।

सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोर्- नामग्रहणभीरव: ॥ 29 ॥

डाकिनी, यातुधान तथा कुष्माण्ड नामक दुष्ट डाइनें बच्चों की सबसे बड़ी शत्रु हैं तथा भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष, राक्षस तथा विनायक जैसे दुष्टात्माओं के साथ कोटरा, रेवती, ज्येष्ठा, पूतना तथा मातृका जैसी डाइनें भी सदैव शरीर, प्राण तथा इन्द्रियों को कष्ट पहुँचाने के लिए तैयार रहती हैं जिससे स्मृति की हानि, उन्माद तथा बुरे स्वप्न उत्पन्न होते हैं। स्वप्न में देखे गए उत्पात, वृद्ध ग्रह, बाल ग्रह, यह सभी अनिष्ट भगवान् विष्णु के नामोच्चार से ही उन्हें नष्ट किया जा सकता है क्योंकि जब भगवान् विष्णु का नाम प्रतिध्वनित होता है, तो वे सब डर जाते हैं और दूर भाग जाते हैं।